**International Journal of Research in Hindi**
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 22-11-2019; Accepted: 05-12-2019; Published: 26-12-2019
Volume 1; Issue 1; 2019; Page No. 16-17

# शिष्टाचार और संस्कार एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

**कृष्ण कुमार शर्मा**
(शोधार्थी) उच्च शिक्षा और शोध संस्थान (विश्व विद्यालय विभाग) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास स्नातकोत्तर केन्द्र, धारवाड़, कर्नाटक, भारत

## सारांश

शिष्टाचार का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है कहने को तो शिष्टाचार की बातें छोटी-छोटी होती हैं, लेकिन ये बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। व्यक्ति अपने शिष्ट आचरण से सबका स्नेह और आदर पाता है। मानव होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति को शिष्टाचार का आभूषण अवश्य धारण करना चाहिए। शिष्टाचार से ही मनुष्य के जीवन में प्रतिष्ठा एवं पहचान मिलती है और वह भीड़ में भी अलग नजर आता है। जब कोई मनुष्य शिष्टाचार रूपी आभूषण को धारण करता है तब वह एक महान व्यक्ति के रूप में सबके लिए प्रेरणास्रोत बन जाता है। ये छोटी-छोटी बातें जीवन भर साथ देती हैं।

**मूल शब्द:** शिष्टाचार, जीवन मूल्य, व्यवहार, व्यक्तित्व, विनम्रता आदि।

## प्रस्तावना

मनुष्य का शिष्टाचार ही उसके बाद लोगों को याद रहता है और अमर बनाता है। शिष्टाचार हमारे जीवन का एक अनिवार्य अंग है। विनम्रता सहजता से वार्तालाप मुस्कराकर जवाब देने की कला प्रत्येक व्यक्ति को मोहित कर लेती है। जो व्यक्ति शिष्टाचार से पेश आते हैं वे बड़ी-बड़ी डिग्रियां न होने पर भी अपने-अपने क्षेत्र में पहचान बना लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे शख्स से शिष्टाचार और विनम्रता की आकांक्षा करता है। शिष्टाचार का पालन करने वाला व्यक्ति स्वच्छ, निर्मल और दुर्गुणों से परे होता है। व्यक्ति की कार्यशैली भी उसमें शिष्टाचार के गुणों को उत्पन्न करती है। सामान्यत: शिष्टाचारी व्यक्ति अध्यात्म के मार्ग पर चलने वाला होता है। अध्यात्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्म किसी वजह से हुआ है। हमारे जीवन का उद्देश्य ईश्वर की दिव्य योजना का एक अंग है। ऐसे में शिष्टाचार का गुण व्यक्ति को अभूतपूर्व सफलता और पूर्णता प्रदान करता है। यदि व्यक्ति किसी समस्या या तनाव से ग्रस्त है, लेकिन ऐसे में भी वह शिष्टाचार के साथ पेश आता है तो अनेक लोग उसकी समस्या का हल सुलझाने के लिए उसके साथ खड़े हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी समस्या के समाधान तक पहुंच जाता है। शिष्टाचार को अपने जीवन का एक अंग मानने वाला व्यक्ति अकसर अहंकार ईर्ष्या लोभ क्रोध आदि से मुक्त होता है। ऐसा व्यक्ति हर जगह अपनी छाप छोड़ता है। कार्यस्थल से लेकर परिवार तक हर जगह वह और उससे सभी संतुष्ट रहते हैं।

### विश्लेषण

शिष्टाचारी व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहता है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति सद्विचारों से पूर्ण व सकारात्मक नजरिया रखता है। उसके मन के सद्भाव उसे प्रफुल्लित रखते हैं। चिकित्सा विज्ञान भी अब इस तथ्य को सिद्ध कर चुका है कि अच्छे विचारों का प्रभाव मन पर ही नहीं बल्कि तन पर भी पड़ता है। मस्तिष्क की कोशिकाएं मन में उठने वाले विचारों के अनुसार कार्य करती हैं। इसके विपरीत नकारात्मक विचारों का मन व तन पर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। जेम्स एलेन ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अच्छे विचारों के सकारात्मक व स्वास्थ्यप्रद और बुरे विचारों के बुरे नकारात्मक व घातक फल आपको वहन करने ही पड़ेंगे. व्यक्ति जितना अधिक अपने प्रति ईमानदार और शिष्टाचारी होता है वह उतनी ही ज्यादा सच्ची और वास्तविक खुशी को प्राप्त करता है.को स्वर्णालंकार बाजूबंद आदि सुशोभित नहीं करते, चंद्र की भांति उज्ज्वल कान्तिवाले हार भी शोभा नहीं बढ़ाते, न नहाने-धोने से, न उबटन मलने से, न फूल टांकने या पुष्पमाला धारण करने से, न केश-विन्यास या ज़ुल्फ़ी संवारने-सजाने से ही उसकी मान और शोभा बढ़ती है। अपितु जिस वाणी को शिष्ट, सभ्य, शालीन और व्याकरण-सम्मत मानकर धारण किया जाता है; एकमात्र वैसी वाणी ही पुरुष को सुशोभित करती है। बाहर के सब अलंकरण तो निश्चित ही घिस जाते हैं, या चमक खो बैठते हैं (किंतु) मधुरवाणी का अलंकरण हमेशा चमकने वाला आभूषण है। इसलिये मनुष्य कि वाणी ही उसका यथार्थ आभूषण है-'वाग्ग भूषणम भूषणम'. अर्थात व्यवहार और वाणी में सज्जनता और शिष्टाचार ही चरित्र का वह गुण है जो उसे जीवन के हर क्षेत्र में विजय दिला सकती है.

किस समय, कहाँ पर, किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए- उसके अपने-अपने ढंग होते हैं। हम जिस समाज में रहते हैं, हमें अपने शिष्टाचार को उसी समाज में अपनाना पड़ता है, क्योंकि इस समाज में हम एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। जिस प्रकार एक परिवार के सभी सदस्य आपस में जुड़ होते हैं ठीक इसी प्रकार पूरे समाज में, देश में- हम जहाँ भी रहते हैं, एक विस्तृत परिवार का रूप होता है और वहाँ भी हम एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। एक बालक के लिए शिष्टाचार की शुरूआत उसी समय हो जाती है जब उसकी माँ उसे उचित कार्य करने के लिये प्रेरित करती है। जब वह बड़ा होकर समाज में अपने कदम रखता है तो उसकी शिक्षा प्रारंभ होती है। यहाँ से उसे शिष्टाचार का उचित ज्ञान प्राप्त होता है और यही शिष्टाचार जीवन के अंतिम क्षणों तक उसके साथ रहता है। यहीं से एक बालक के कोमल मन पर अच्छे-बुरे का प्रभाव आरंभ होता है। अब वह किस प्रकार का वातावरण प्राप्त करता है और किस वातावरण में स्वयं को किस प्रकार से ढालता है- वही उसको इस समाज में उचित-अनुचित की प्राप्ति करवाता है।

### ||| व्यवहार की कुछ बातें |||

समाज में कहाँ, कब, कैसा शिष्टाचार किया जाना चाहिए, आइए इसपर एक दृष्टि डालें :

1. बड़ों को कभी तुम मत कहो उन्हें आप कहो और अपने लिए 'मैं' का प्रयोग मत करो हम कहो।
2. जो गुरुजन को सबेरे मिलते ही प्रणाम करो। अपने से बड़े लोग जब मिलें जब उनसे भेंट हो उन्हें प्रणाम करना चाहिए।
3. 3. जहाँ दीपक जलाने पर या मन्दिर में आरती होने पर सायंकाल प्रणाम करने की प्रथा हो वहाँ उस समय भी प्रणाम करना चाहिए।
4. 4. किसी नये व्यक्ति से परिचय करया जाय, तब उन्हें प्रणाम करना चाहिए।

5. 5. गुरुजनों को पत्र व्यवहार में भी प्रणाम लिखना चाहिए |
6. 6. प्रणाम करते समय हाथ में कोई वस्तु हो तो उसे बगल में दबाकर या एक ओर रखकर दोनों हाथों से प्रणाम करना चाहिए |
7. 7. चिल्लाकर या पीछे से प्रणाम नहीं करना चाहिए | सामने जाकर शान्ति से प्रणाम करना चाहिए |
8. प्रणाम की उत्तम रीति दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाना है | जिस समाज में प्रणाम के समय जो कहने की प्रथा हो, उसी शब्द का व्यवहार करना चाहिए | महात्माओं तथा साधुओं के चरण छूने की प्राचीन प्रथा है इसका पालन करना चाहिए |
9. 9. अपने से बड़ा कोई पुकारे तो 'क्या', 'ऐं', 'हाँ' नहीं कहना चाहिए | जी हाँ, जी कहकर ही प्रत्युत्तर देना चाहिए |
10. 10. लोगों को बुलाने, पत्र लिखने या चर्चा करने में उनके नाम के आगे 'श्री' और अन्त में 'जी' अवश्य लगाएं |
11. 11. अपने से बड़ों की ओर पैर फैलाकर या पीठ करके नहीं बैठना चाहिए |
12. 12. मार्ग में जब गुरुजनों के साथ चलना हो तो उनके आगे या बराबर मत चलो उनके पीछे चलो | उनके पास कुछ सामान हो तो आग्रह करके उसे स्वयं ले लो | कहीं दरवाजे में से जाना हो तो पहले बड़ों को जाने दो | द्वार बंद है तो आगे बढ़कर खोल दो और आवश्यकता हो तो भीतर प्रकाश कर दो | यदि द्वार पर पर्दा हो तो उसे तब तक उठाये रहो, जब तक वे अंदर न चले जायें |
13. 13. सवारी पर बैठते समय बड़ों को पहले बैठने देना चाहिए | कहीं भी बड़ों के आने पर बैठे हो तो खड़े हो जाओ और उनके बैठ जाने पर ही बैठो | उनसे ऊँचे आसान पर नहीं बैठना चाहिए |
14. 14. जब कोई आदरणीय व्यक्ति अपने यहाँ आएँ तो कुछ दूर आगे बढ़कर उनका स्वागत करें और जब वे जाने लगें तब सवारी,द्वार तक उन्हें पहुँचाना चाहिए |

### || छोटों के प्रति व्यवहार |||

1. किसी को भी 'तू' मत कहो, 'तुम' या 'आप' कहो |
2. जब कोई आपको प्रणाम करे तब उसके प्रणाम का उत्तर अवश्य दो |
3. नौकर को भी भोजन तथा विश्राम के लिए उचित समय दो | बीमारी आदि में उसकी सुविधा का ध्यान रखो | किसीको भी कभी नीच मत समझो |
4. आपके द्वारा आपसे जो छोटे हैं, उन्हें असुविधा न हो यह ध्यान रखना चाहिए | छोटों के आग्रह करने पर भी उनसे अपनी सेवा का काम कम से कम लेना चाहिए

### ||| महिलाओं के प्रति व्यवहार |||

1. महिलाओं का सदा सम्मान करना सीखें |
2. अपने से बड़ी स्त्रियों को माता, बराबर वाली को बहिन तथा छोटी को बेटी समझें |
3. बिना जान पहचान के स्त्री से कभी बात करनी ही पड़े तो दृष्टि नीचे करके बात करनी चाहिए |
4. स्त्रियों को घूरना, उनसे हँसी करना उनके प्रति इशारे करना या उनको छूना असभ्यता है | पाप भी है |
5. घर के जिस भाग में स्त्रियाँ रहती हैं, वहाँ बिना सूचना दिये नहीं जाना चाहिए | जहाँ स्त्रियाँ स्नान करती हों, वहाँ नहीं जाना चाहिए | जिस कमरे में कोई स्त्री अकेली हो, सोयी हो, कपड़े पहन रही हो, अपरिचित हो, भोजन कर रही हो, वहाँ भी नहीं जाना चाहिए |
6. गाड़ी आदि में स्त्रियों को बैठने के लिए पहले जगह देनी चाहिए | कहीं सवारी में या अन्यत्र जगह की कमी हो और कोई स्त्री वहाँ आये तो उठकर बैठने के लिए स्थान खाली कर देना चाहिए |

### उपसंहार

अगर हम सभी स्वंय और स्वंय के बच्चो को इन सभी बातो का पालन करवाए तो हमारा जीवन पूरी तरह से शिष्टाचार से भर जाता है | शिष्टाचार मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण होता है | शिष्टाचार ही मनुष्य की एक अलग पहचान करवाता है | शिष्टाचारी मनुष्य समाज में हर जगह सम्मान पाता है, चाहे वह गुरुजन के समक्ष हो परिवार में हो, समाज में हो, व्यवसाय में हो अथवा अपनी मित्र-मण्डली में | शिष्ट व्यवहार मनुष्य को ऊँचाइयों तक ले जाता है | शिष्ट व्यवहार के कारण मनुष्य का कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है | शिष्टाचारी चाहे कार्यालय में हो अथवा अन्यत्र कहीं, शीघ्र ही लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता हैं | लोग भी उससे बात करने तथा मित्रता करने आदि में रुचि दिखाते हैं |

एक शिष्टाचारी मनुष्य अपने साथ के अनेक लोगों को अपने शिष्टाचार से शिष्टाचारी बना देता शिष्टाचार वह ब्रह्मास्त्र है जो अँधेरे में भी अचूक वार करता है- अर्थात् शिष्टाचार अँधेरे में भी आशा की किरण दिखाने वाला मार्ग है |

### संदर्भ सूची

1. महेश शर्मा शिष्टाचार ग्रंथ अकादमी वर्ष २००८
2. विजय कुमार सप्पत्ति शिष्टाचार कैसा हो हमारा व्यवहार सामयिक प्रकाशन वर्ष २०१६
3. एश्वर्या खातरकर शिष्टाचार लुकचुप ब्लाग वर्ष २०१९
4. डॉ.सुनील कुमार परीट शिष्टाचार https://sarasach.com वर्ष २०१९